सूरह — एक कहानी

सूरह साद

हर्फ़ साद

पूरा सफ़र — बादशाह, सब्र, और पहला इनकार —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 38 • 88 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

साद; वल्-क़ुरआनि ज़िज़्-ज़िक्र
1. साद। नसीहत वाले क़ुरआन की क़सम।

या दाऊदु इन्ना ज'अल्नाक ख़लीफ़तन फ़िल्-अर्ज़ि फ़ह्कुम बैनन्-नासि बिल्-हक़्क़
26. ऐ दाऊद, हमने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया, तो लोगों के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला करो।

इन्ना वजद्नाहु साबिरा; नि'मल्-'अब्द; इन्नहू अव्वाब
44. बेशक हमने उसे सब्र करने वाला पाया; क्या अच्छा बंदा; बेशक वो बहुत रुजू करने वाला था।

क़ाल अना ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन तीन
76. उसने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से।

इल्ला 'इबादक मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन
83. सिवाए तेरे उन बंदों के जो ख़ालिस किए गए हैं।

इन हुव इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-'आलमीन
87. ये तो जहानों के लिए सिर्फ़ एक नसीहत है।

एक ख़ुदा? ये तो अजीब बात है

बेटा, ये सूरह हर्फ़ '**साद**' और एक क़सम से खुलती है: '**वल्-क़ुरआनि ज़िज़्-ज़िक्र** — **नसीहत वाले** क़ुरआन की क़सम।'

और फिर ये असल वजह बयान करती है कि क़ुरैश ने क्यों मुख़ालफ़त की: '**बलिल्-लज़ीन कफ़रू फ़ी 'इज़्ज़तिंव्-व शिक़ाक़** — बल्कि, जिन्होंने कुफ़्र किया वो **ग़ुरूर** और **मुख़ालफ़त** में हैं।'

बेटा, तशख़ीस ग़ौर कीजिए: '**'इज़्ज़ह**' — अपनी अज़मत का एक झूठा एहसास — और '**शिक़ाक़**' — **मुख़ालफ़त सिर्फ़ मुख़ालफ़त के लिए।** उलझन नहीं। सबूत की कमी नहीं। **ग़ुरूर।** उस लफ़्ज़ को याद रखिए; **सूरह इसी पर ख़त्म होगी।**

फिर क़ुरआन उनकी महफ़िल नक़्ल करता है: उनके सरदार ये कहते हुए निकल गए, '**इम्शू वस्बिरू 'अला आलिहतिकुम** — चलते रहो, और अपने ख़ुदाओं पर **जमे रहो!**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **उन्होंने एक दूसरे से बातिल पर सब्र करने को कहा।** ग़लत रास्ते पर चलते लोग भी एक दूसरे को उस पर जमे रहने की हिम्मत देते हैं। **इसी लिए जिस सोहबत में आप रहते हैं वो इतनी मायने रखती है।**

'**अ ज'अलल्-आलिहत इलाहंव्-वाहिदा** — क्या उसने ख़ुदाओं को **एक ख़ुदा** बना दिया? **इन्न हाज़ा ल-शै-उन 'उजाब** — बेशक, ये एक **अजीब** बात है!'

बेटा, ग़ौर कीजिए **ये उनका असली ए'तिराज़ था**: ये नहीं कि अल्लाह का वुजूद नहीं, बल्कि ये कि **सिर्फ़ एक माबूद हो**, बिना वसीलों और बिना ऑप्शन्स के — **ये बहुत सादा था, बहुत मुतालबा करने वाला**, उनके पूरे समाजी निज़ाम के लिए बहुत बड़ी तब्दीली।

'अ उन्ज़िल 'अलैहिज़्-ज़िक्रु मिम्-बैनिना — क्या **हम सब में से इसी** पर पैग़ाम उतारा?' बेटा, **फिर वही — हसद।** 'बल हुम फ़ी शक्किम्-मिन ज़िक्री — बल्कि वो मेरी नसीहत में **शक** में हैं — **बल लम्मा यज़ूक़ू 'अज़ाब** — बल्कि, **उन्होंने अभी मेरा अज़ाब चखा नहीं।**'

दाऊद: ताक़त, और हुजरे में एक आज़माइश

फिर अल्लाह अपने रसूल ﷺ को उन अंबिया के क़िस्सों से तसल्ली देते हैं जो आज़माए गए — और बेटा, **वो एक बादशाह से शुरू करते हैं।**

'**वज़्कुर 'अब्दना दाऊद ज़ल्-अय्द** — और **हमारे बंदे दाऊद** को **याद** करो, **ताक़त** वाले — **इन्नहू अव्वाब** — बेशक, वो बार-बार (अल्लाह की तरफ़) **लौटने** वाला था।'

बेटा, वो लक़ब ग़ौर कीजिए जो अल्लाह उसे पहले देते हैं: '**हमारा बंदा**'। **वो एक बादशाह था, एक जंगजू, वो जिसने जालूत को मारा — और पहले जिस इज़्ज़त का

नाम लिया गया वो बंदगी है।**

और 'ज़ल-अय्द' — **हाथों वाला**, ताक़त और सलाहियत वाला। नबी ﷺ ने हमें उसकी इबादत के बारे में बताया: **अल्लाह को सब से महबूब नमाज़ दाऊद की नमाज़ है** — वो आधी रात सोते, एक तिहाई नमाज़ पढ़ते, और एक छठाई सोते। और **सब से महबूब रोज़ा दाऊद का रोज़ा** है — वो एक दिन छोड़ कर रोज़ा रखते। बेटा, **एक काम-काजी बादशाह जिसने अपनी रातें ऐसे तरतीब दीं।**

'इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबाल म'अहू युसब्बिह्न बिल्-'अशिय्यि वल्-इश्राक़ — बेशक, हमने **पहाड़ों** को ताबे किया कि उसके साथ शाम और सूरज-तुलू पर **तस्बीह** करें — **वत्-तैर महशूरह** — और **परिंदे**, जमा किए हुए।' बेटा, **पहाड़ और परिंदे उसके ज़िक्र में शामिल होते।**

'व शददना मुल्कहू व अतैनाहुल्-हिक्मत **व फ़स्लल्-ख़िताब** — और हमने उसकी बादशाहत मज़बूत की और उसे **हिकमत** और **फ़ैसला-कुन बात** अता की।'

और फिर, बेटा, **दो झगड़ने वालों** का वाक़िआ आता है: 'व हल अताक नब-उल्-ख़स्मि इज़ तसव्वरुल्-मिहाब — क्या तुम्हारे पास झगड़ने वालों की ख़बर आई, जब वो उसके ज़ाती हुजरे की **दीवार फाँद** कर आ गए?'

उन्होंने कहा: **मत डरो** — 'ख़स्मानि बग़ा ब'अ्ज़ुना 'अला ब'अ्ज़ — दो झगड़ने वाले, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ुल्म किया — **फ़ह्कुम बैनना बिल्-हक़्क़ि व ला तुश्तित** — तो हमारे दरमियान हक़ से फ़ैसला करो और हद से मत बढ़ो।'

और उन में से एक ने अपना मुक़दमा पेश किया: उसके भाई के पास **निन्यानवे दुम्बियाँ** थीं और उसके पास **एक**, और उसने उसे भी माँगा। और दाऊद (अलैहि0) ने फ़ौरन फ़ैसला दिया कि ये ज़्यादती है।

'**व ज़न्न दाऊदु अन्नमा फ़तन्नाहु फ़स्तग़फ़र रब्बहू व ख़र्र राकि'अंव्-व अनाब** — और दाऊद को **यक़ीन हो गया कि हमने उसे आज़माया**, तो उसने अपने रब से **मग़फ़िरत माँगी** और **रुकू में गिर पड़ा और रुजू किया।**'

बेटा, **उसने दूसरे फ़रीक़ को सुने बग़ैर फ़ैसला सुना दिया था।** और एक नबी के लिए, ये भी काफ़ी था कि वो फ़ौरन गिर पड़े और मग़फ़िरत माँगें। **और ये आपके लिए एक बड़ा सबक़ है: कभी दूसरा पहलू सुने बग़ैर फ़ैसला मत कीजिए** — घर में नहीं, दफ़्तर में नहीं, किसी ग्रुप में नहीं।

'**या दाऊदु इन्ना ज'अल्नाक ख़लीफ़तन फ़िल्-अर्ज़ि फ़ह्कुम बैनन्-नासि बिल्-हक़्क़ि व ला तत्तबि'इल्-हवा फ़-युज़िल्लक 'अन सबीलिल्लाह** — ऐ दाऊद, हमने तुम्हें ज़मीन में **ख़लीफ़ा** बनाया, तो लोगों के दरमियान **हक़** से फ़ैसला करो, **और ख़्वाहिश की पैरवी मत करो कि वो तुम्हें अल्लाह के रास्ते से भटका दे।**'

सुलैमान, और ग़ुरूब पर घोड़े

'व वहब्ना लि-दाऊद सुलैमान — और दाऊद को हमने **सुलैमान** अता किया — **नि'मल्-'अब्द** — क्या **अच्छा बंदा** — **इन्नहू अव्वाब** — बेशक, वो बार-बार लौटने वाला था।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **वही तारीफ़ जो बाप को दी गई बेटे को दी गई** — 'नि'मल-'अब्द, इन्नहू अव्वाब'। और फिर, **इज़्ज़त बंदगी है, बादशाही नहीं।**

'इज़ 'उरिज़ 'अलैहि बिल्-'अशिय्यिस्-साफ़िनातुल्-जियाद — जब दोपहर-बाद उसके सामने नस्ल के तेज़ **घोड़े** पेश किए गए — **फ़-क़ाल इन्नी अह्बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि 'अन ज़िक्रि रब्बी** — तो उसने कहा: मैंने अपने रब के ज़िक्र पर **अच्छी चीज़ों की मोहब्बत को तरजीह दी** — **हत्ता तवारत बिल्-हिजाब** — यहाँ तक कि सूरज **पर्दे में छुप गया।**'

बेटा, उलमा समझाते हैं कि **ये घोड़े अल्लाह के रास्ते के लिए तैयार किए गए थे**, और उनका मुआइना एक जायज़ मामला था — मगर **उन में उसके मसरूफ़ हो जाने ने उसके ज़िक्र में ताख़ीर डाली, और एक नबी के लिए वो भी अहम है।** और उसने क्या किया? उसने उन्हें वापस लाने का हुक्म दिया, और **उन्हें अपने से हटा दिया** — यानी उसने वो चीज़ हटा दी जिसने उसे ग़ाफ़िल किया।

बेटा, **यही हमारे लिए सबक़ है। जब कोई हलाल चीज़ तुम्हें अल्लाह से दूर खींचने लगे, उसका क़तई फ़ैसला करो।** वो फ़ोन जो तुम्हारी फ़ज्र खा जाए, वो शो जो तुम्हारी रात खा जाए, वो शौक़ जो तुम्हारा जुमा खा जाए — **उस से बे-हद बहस मत करो। उसे काट दो।**

'**रब्बिग़्फ़िर ली व हब ली मुल्कल्-ला यम्बग़ी लि-अहदिम्-मिम्-ब'अ्दी** — मेरे रब, **मुझे बख़्श दे** और मुझे ऐसी बादशाहत दे जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो — **इन्नक अन्तल्-वह्हाब** — बेशक, तू ही **बड़ा अता करने** वाला है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **उसने पहले मग़फ़िरत माँगी, फिर बादशाहत माँगी।** और उसने कुछ **अनोखा** माँगा ताकि वो **नुबुव्वत की एक साफ़ निशानी** हो, महज़ ख़्वाहिश नहीं। और अल्लाह ने उसे **हवा** दी, और **जिन्न** — 'हाज़ा 'अता-उना **फ़म्नुन औ अम्सिक बि-ग़ैरि हिसाब** — ये हमारी अता है, तो **बे-हिसाब** दे या रोक ले।'

अय्यूब: एक अच्छा बंदा

और फिर, बेटा, वो नबी जिसका नाम **सब्र का हम-मा'ना** है: '**वज़्कुर 'अब्दना अय्यूब इज़ नादा रब्बहू** अन्नी मस्सनियश्-शैतानु बि-नुस्बिंव्-व 'अज़ाब — और हमारे बंदे **अय्यूब** को याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा: बेशक, शैतान ने मुझे **मुश्किल** और **तकलीफ़** से छू लिया।'

बेटा, देखिए **उसने कैसे शिकायत की** — और ये **अदब का एक सबक़** है। उसने लंबे बरसों में अपनी दौलत, अपने बच्चे, और अपनी सेहत खो दी। और जब उसने आख़िर-कार बात की, **उसने ये नहीं कहा 'मैं ही क्यों?' उसने अपने रब पर इल्ज़ाम नहीं लगाया।** उसने बस अपनी हालत बयान की।

'**उर्कुज़ बि-रिज्लिक** — अपने **पाँव** से **मार** — **हाज़ा मुग़्तसलुम्-बारिदुंव्-व शराब** — ये ठंडा **नहाने** का पानी और एक **पीने** की चीज़ है।'

बेटा, **इलाज उसके अपने पाँव के नीचे से आया। शिफ़ा उसी ज़मीन में थी जिस पर

वो सारा वक़्त लेटा रहा था।** कभी जिस चीज़ की तुम्हें शिद्दत से ज़रूरत होती है **वो तुम्हारे सोचने से ज़्यादा क़रीब होती है — मगर वो तब आती है जब अल्लाह फ़ैसला करें, उस से पहले नहीं।**

'व वहब्ना लहू अह्लहू **व मिस्लहुम म'अहुम** रहमतम्-मिन्ना — और हमने उसे उसका **घराना** वापस दिया **और उनके साथ उतने ही और**, अपनी तरफ़ से एक रहमत के तौर पर।' बेटा, **बहाल — और दुगना।**

'व ख़ुज़ बि-यदिक ज़िग़सन फ़ज़्रिब बिही **व ला तह्नस** — और अपने हाथ में घास का एक **मुट्ठा** लो और उस से मारो, **और अपनी क़सम मत तोड़ो।**' बेटा, उसने परेशानी के एक लम्हे में अपने घर के एक फ़र्द के बारे में क़सम खाई थी, और **अल्लाह ने उसे बिना नुक़सान के उसे पूरा करने का एक रहीम तरीक़ा सिखाया।** देखिए: **क़सम का पूरा करना तक रहमत से नरम कर दिया गया।**

'**इन्ना वजद्नाहु साबिरा** — **बेशक, हमने उसे सब्र करने वाला पाया** — **नि'मल्-'अब्द** — **क्या अच्छा बंदा** — **इन्नहू अव्वाब** — बेशक, वो बार-बार लौटने वाला था।'

बेटा, **यही वो गवाही है जो हर मोमिन को चाहनी चाहिए**: *'हमने उसे सब्र करने वाला पाया।'* *'वो कभी आज़माया न गया'* नहीं — **'हमने उसे सब्र करने वाला पाया'।**

पहला इनकार

और अब, बेटा, सूरह अपने उरूज तक पहुँचती है — **इंसानी तारीख़ के बिल्कुल आग़ाज़ का मंज़र जो उस ग़ुरूर को समझाता है जिस से सूरह खुली थी।**

'इज़ क़ाल रब्बुक लिल्-मलाइकति इन्नी ख़ालिकुम्-बशरम्-मिन तीन — जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा: बेशक, मैं **मिट्टी** से एक **इंसान** बनाने वाला हूँ — **फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्-रूही फ़-क़'ऊ लहू साजिदीन** — तो जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उस में **अपनी रूह** से **फूँक** दूँ, तो उसके सामने

सजदे में गिर जाना।'

'फ़-सजदल्-मलाइकतु **कुल्लुहुम अज्म'ऊन** — तो फ़रिश्ते सजदे में गिर गए, **सब के सब पूरे** — **इल्ला इब्लीस** — **सिवाए इब्लीस** के — **इस्तक्बर व कान मिनल्-काफ़िरीन** — उसने **ग़ुरूर** किया और काफ़िरों में से हो गया।'

बेटा, ताकीद ग़ौर कीजिए: '**कुल्लुहुम अज्म'ऊन**' — **हर एक, बिना इस्तिस्ना। सिवाए एक के।**

और अल्लाह ने उस से पूछा: '**मा मन'अक अन तस्जुद लिमा ख़लक़्तु बि-यदय्य** — जिसे मैंने **अपने हाथों** से बनाया उसे सजदा करने से तुझे किस चीज़ ने **रोका**? **अस्तक्बर्त अम कुन्त मिनल्-'आलीन** — क्या तूने **ग़ुरूर** किया, या तू बुलंद-मर्तबा वालों में से था?'

'**क़ाल अना ख़ैरुम्-मिन्हु** — **उसने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ** — **ख़लक़्तनी मिन नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन तीन** — **तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से।**'

बेटा, **ये तख़्लीक़ में कभी बोला गया पहला मग़रूर जुमला है, और उसके बाद का हर ग़ुरूर इसी की नक़्ल है।** इसकी बनावट का मुताला कीजिए:

पहले, उसने हुक्म पर बहस की — इताअत नहीं की, बल्कि **वजह पूछी।** **दूसरे**, उसने ख़ुद का **मुक़ाबला** किया: *मैं उस से बेहतर हूँ।* **तीसरे**, उसने अपनी बरतरी को **असल** पर बाँधा — *आग बनाम मिट्टी* — यानी उस चीज़ पर जो उसने ख़ुद नहीं कमाई।

बेटा, **हर नस्ली, ख़ानदानी, ज़ाती और क़ौमी ग़ुरूर इसी तीन-क़दमी सीढ़ी पर चढ़ता है। और वो सब इब्लीस के जुमले की नक़्ल हैं।**

और उसका फ़ैसला: 'फ़ख़्रुज मिन्हा फ़-इन्नक रजीम — तो निकल जा; बेशक तू **मरदूद** है।' और उसने मोहलत माँगी — और **मोहलत दी गई।**

और फिर उसने अपना मंसूबा एलान किया: '**फ़-बि-'इज़्ज़तिक ल-उग़्वियन्नहुम

अज्म'ईन** — तेरी **इज़्ज़त** की क़सम, मैं उन **सब** को ज़रूर बहकाऊँगा — **इल्ला 'इबादक मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन** — **सिवाए तेरे उन बंदों के जो ख़ालिस किए गए हैं।**'

बेटा, **यही वाहिद पनाह है जिसका इक़रार ख़ुद दुश्मन ने किया: 'अल-मुख़्लसीन' — वो जिन्हें अल्लाह ने अपने लिए ख़ालिस कर लिया।** और ग़ौर कीजिए ये लफ़्ज़ **मफ़'ऊल** के सीग़े में है — *ख़ालिस किए गए*, सिर्फ़ *ख़ालिस करने वाले* नहीं। **इख़्लास एक अता है जिसे माँगना पड़ता है।**

और सूरह का इख़्तिताम: '**कुल मा अस्अलुकुम 'अलैहि मिन अज्रिंव्-व मा अना मिनल्-मुतकल्लिफ़ीन** — कहो: मैं तुमसे इस पर कोई **उजरत** नहीं माँगता, और न मैं **बनावट** करने वालों में से हूँ — **इन हुव इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-'आलमीन** — **ये तो जहानों के लिए सिर्फ़ एक नसीहत है।**'

बेटा, तो ये सूरह **ग़ुरूर** से शुरू हुई और **ग़ुरूर** पर ख़त्म — और उन दोनों के दरमियान उसने आपको **तीन बंदे** दिखाए जिन्हें अल्लाह ने *नि'मल-'अब्द'* कहा: एक बादशाह, एक बादशाह का बेटा, और एक ऐसा आदमी जिसने सब कुछ खो दिया। **और तीनों की एक ही सिफ़त थी: अव्वाब — वो लौटते रहे।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. इनकार की जड़ अक्सर सबूत की कमी नहीं — 'इज़्ज़ह' और 'शिक़ाक़' है: ग़ुरूर और सिर्फ़ मुख़ालफ़त के लिए मुख़ालफ़त।

2. लोग एक दूसरे को बातिल पर भी 'सब्र' की हिम्मत देते हैं — इसी लिए सोहबत इतनी मायने रखती है।

3. अल्लाह ने बादशाहों को भी पहले 'हमारा बंदा' कहा — इज़्ज़त बंदगी में है, ताज में नहीं।

4. दूसरा पहलू सुने बग़ैर कभी फ़ैसला मत कीजिए — और दाऊद (अलैहि0) की तरह फ़ौरन रुजू कीजिए।

5. जब कोई हलाल चीज़ आपको ज़िक्र से दूर खींचे, उस से बहस मत कीजिए — उसे काट दीजिए।

6. 'इन्ना वजद्नाहु साबिरा' — यही गवाही चाहिए; और शिफ़ा कभी आपके अपने पाँव के नीचे होती है, मगर उनके वक़्त पर।

7. हर ग़ुरूर इब्लीस के जुमले की नक़्ल है — और वाहिद पनाह वो है जिसका इक़रार ख़ुद दुश्मन ने किया: 'अल-मुख़्लसीन'।

या अल्लाह, हमें अपने लिए ख़ालिस कर लीजिए, हमें 'अव्वाब' बना दीजिए, और हमारे दिलों से इब्लीस वाला जुमला निकाल दीजिए। आमीन।